जलवायु परिवर्तन से संकट में धरोहर

पूनम गौड़

उत्तरकाशी के धराली कस्बे में भारी बारिश से मची तबाही में ऐतिहासिक कल्प केदार मंदिर दब गया है। खीर गंगा नदी में ऊपरी इलाकों में आई बारिश से पानी बढ़ा और इस बहाव के साथ मलबा-गाद-पत्थरों ने पानी के साथ आकर धराली को बर्बाद कर दिया। इसने जलवायु परिवर्तन के खतरे को एक बार फिर जाहिर कर दिया है। धराली की तरह गंगासागर के कपिल मुनी आश्रम पर भी खतरा मंडरा रहा है। इसके सागर में समाने की आशंका हर साल बढ़ रही है। गंगा सागर पर मकर सक्रांति पर लाखों की संख्या में श्रद्धालु देश के कई हिस्सों से पहुंचते हैं।

निर्माण से खतरा । कल्प केदार मंदिर की तरह केदारनाथ धाम में ही तबाही का मंजर दुनिया देख चुकी है। इसके बावजूद इन धरोहरों, पहाड़ों को हो रहे नुकसान और यहां बिना किसी वैज्ञानिक अध्ययन के बनाए जा रहे होमस्टे और निर्माण इस खतरे को और बढ़ा रहे हैं।

पर्यटकों का पड़ाव । धराली के कल्प केदार मंदिर की बनावट केदारनाथ धाम जैसी ही है। इस मंदिर को कत्यूर शैली में बनाया गया है। गंगोत्री धाम जाने वाले या फिर गौमुख तपोवन ट्रैक पर जाने वाले लोगों के लिए धराली एक अहम पड़ाव है। यहां करीब 60 से 80 प्रतिशत पर्यटक रुकते हैं। इसकी वजह यह है कि यहां उन्हें मंदिर के दर्शन के साथ खाने-पीने और रास्ते की थकान उतारे का मौका मिल जाता है। आगे मौसम खराब होने पर भी कई पर्यटक यहीं ठहर जाते हैं। इन वजहों से यहां अच्छी-खासी संख्या में पर्यटकों का जमावड़ा प्रायः स्थायी तौर पर रहता है।

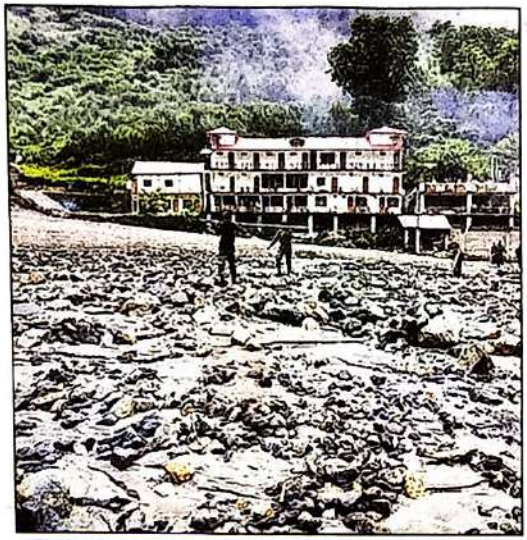

कॉमन रूम

आधा मंदिर । स्थानीय लोगों के अनुसार, यह मंदिर कई सालों तक जमीन के नीचे दबा रहा। इसकी वजह यहां सालों पहले आपदाओं के साथ आए मलबे को माना जाता है। इसके बाद 1945 के आसपास मंदिर की ऊपरी आकृति दिखाई देने बाद खुदाई की गई। 12 फीट तक खुदाई करने के बाद भी अभी आधा मंदिर ही जमीन के ऊपर है।

पूजा की इजाजत नहीं । कल्प केदार मंदिर बहुत पुराना है। इसके पास के अवशेष 17वीं सदी के बताए जाते हैं और यह पुरातत्व विभाग की लिस्ट में शामिल है। इस मंदिर की वजह से ही यहां पर्यटक रुका करते हैं, लेकिन यहां लोगों को पूजा नहीं करने दी जाती। इसकी वजह यह है कि नदी में गंदगी न जाए। सड़क से कुछ सीढ़ियां उतरकर मंदिर में पहुंचा जा सकता है। मंदिर के दब जाने से अब इस कस्बे का रोजगार कई सालों तक प्रभावित रहेगा।

सप्लाई चेन प्रभावित । गंगोत्री से हिमालय ट्रेकिंग करवाने वाले सोल सीकर कंपनी के सौरव ने बताया कि गंगोत्री में कई पर्यटक फंसे हुए हैं। धराली से संपर्क पूरी तरह कट गया है। धराली में उनके परिचित 20 लोग रहते हैं। यह लोग उन्हें खाने पीने, ट्रासंपोर्ट आदि की सर्विस देने में सहयोग करते थे, लेकिन अभी तक किसी से भी संपर्क नहीं हो पा रहा है। हालांकि गंगोत्री सुरक्षित हैं, लेकिन गंगोत्री में भी सप्लाई चेन इस हादसे की वजह से बुरी तरह प्रभावित है।

रोजगार पर आंच । वहीं, सागरद्वीप में आस्था का प्रतीक माने जाने वाले कपिल मुनि के आश्रम पर भी सागर के बढ़ते जलस्तर की वजह से खतरा मंडरा रहा है। काकद्वीप पर रहने वालों के लिए यह आश्रम आस्था के साथ रोजगार का जरिया भी है। इस मंदिर में दर्शन के लिए हर साल लाखों श्रद्धालु आते हैं। लेकिन चिंता की बात यह है कि इस आश्रम की भी सागर से दूरी घटती जा रही है। यह दूरी अब महज 500 मीटर की रह गई है। जब इसका निर्माण हुआ था तो यह दूरी करीब चार किलोमीटर थी।

नए मंदिर पर संकट । गंगासागर आश्रम के पास स्थित जमीन धीरे-धीरे समुद्र में समा रही है। इस आश्रम से कई पौराणिक कथाएं जुड़ी हुई हैं। कपिल मुनि का मंदिर 1437 में स्वामी रामानंद ने स्थापित किया था। हालांकि वह मंदिर वर्तमान जगह से लगभग 20 किलोमीटर की दूरी पर था। वह समुद्र में समा गया था। इसे फिर दूसरी जगह स्थापित किया गया लेकिन वह भी समुद्र में समा गया। अब वर्तमान मंदिर पर भी खतरा मंडरा रहा है। वर्तमान मंदिर का निर्माण 1970 के दशक में किया गया था। जब यह बनाया गया था उस समय सागर से इसकी दूरी करीब चार किलोमीटर थी। अब यह सिमटते-सिमटते 500 मीटर तक रह गई है।

nwda.gov.in